असत्ख्यातिवाद :- माध्यमिक बौद्ध दार्शनिक द्वारा मान्य सिद्धान्त असत्ख्यातिवाद कहलाता है। यह दर्शन शून्यवादी है और विश्व की यथार्थ सत्ता को अस्वीकार करता है। इसके अनुसार विश्व मृगतृष्णावत् मिथ्या है। यह स्वप्न के समान

Scanned with CamScanner

सर्वथा असत् है। भ्रमवश असत् ही सत् के समान प्रतीत होने लगता है। अपने इस सिद्धान्त की पुष्टि वह असत्ख्यातिवाद के अनुसार करता है। रज्जु को जब भ्रमवश सर्प समझा जाता है तब रज्जु में सर्प का नितान्त अभाव होता है। रज्जु में तीनों कालों में सर्प की सत्ता नहीं होती है। इस प्रकार जहाँ सर्प का अभाव है वहाँ सर्प की प्रतीति होती है अर्थात् भ्रमवश असत् ही सत् के रूप में प्रतीत होने लगता है। भ्रम में असत् की प्रतीति मान्य होने के कारण भ्रमविषयक माध्यमिक बौद्धदर्शन का यह सिद्धांत असत्ख्यातिवाद कहलाता है।

Scanned with CamScanner